हरिवंश राय बच्चन

जीवन परिचय :– कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर 1907 में इलाहाबाद में हुआ था। आप ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. अंग्रेजी में की। 1942–1952 ई तक यहीं पर प्राध्यापक रहे। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैंड से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वे आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंद्ध रहे और विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। राज्यसभा के सदस्य रहे। 1976 में आप को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 'दो चट्टानें' रचना पर आप को साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया गया। आप का निधन 2003 में मुम्बई में हुआ।

आत्म परिचय

पाठ परिचय :– कवि का कहना हैं मुझ पर जीवन की अनेक जिम्मेदारियां हैं। फिर भी मेरे जीवन में प्रेम है, क्योंकि मैं स्नेह सुरा का पान करता हूँ तथा अपनी इच्छा अनुसार गाता हूँ। संसार की परवाह नहीं करता । मुझ में यौवन का उन्माद हैं। मेरा स्वभाव संसार के लोगों से अलग है, क्योंकि मैं सुख–सुविधाओं की इच्छा नहीं रखता। मुझे कवि के रूप में नहीं पहचाना जाये, बल्कि संसार के एक दीवाने के रूप में पहचाना जाये।

मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ
कर दिया किसी ने झंकृत जिनकों छूकर
मैं सांसों के दो तार लिए फिरता हूँ
मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हू
जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ

शब्दार्थ :– जग–जीवन = दुनिया की जिम्मेदारियाँ, झंकृत = तारों को बजाकर स्वर निकालना, सुरा = मदिरा, पान करना = पीना, ध्यान करना = परवाह करना ।

व्याख्या :– कवि का कहना हैं यद्यपि मुझ पर जीवन की अनेक जिम्मेदारियाँ हैं फिर भी मेरा हृदय प्रेम से लबालब है, क्योंकि किसी ने मेरी साँसो की वीणा को प्रेम से झंकृत कर दिया हैं। इसी लिए प्रति पल मैं प्रेम की अभिव्यक्ति करता हूँ।

मैंने प्रेम रूपी मदिरा का पान किया है, अर्थात् मैं प्रति पल प्रेम में डूबा रहता हूँ। इस लिए मैं संसार, अर्थात् लोगों के कथन की परवाह नहीं करता, क्योंकि संसार के लोग तो उसी की प्रशन्सा करते हैं, जो उनकी प्रशन्सा करते हैं। परन्तु मैं अपने मन को अच्छे लगने वाले भावों को व्यक्त करता हूँ अर्थात् अपने मन की सुनता हूँ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. आत्म कथात्मक शैली
2. भाषा खड़ी बोली
3. रूबाई छन्द
4. साँसों के दो तार, स्नेह सुरा–रूपक अलंकार
5. जग जीवन, स्नेह सुरा अनुप्रास अलंकार

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मॅं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ
मैं जला हृदय में अग्नि दहा करता हूँ
सुख–दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ
जग भव–सागर तरने को नाव बनाए
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ ।

शब्दार्थ :– उद्‌गार = भाव, स्वप्नों का संसार = कल्पनाओं का संसार, भव–सागर = संसार रूपी सागर, मौजों = लहरों ।

व्याख्या :– मेरे हृदय मैं अनेक भाव हैं। ये हृदय के भाव ही संसार को मेरा उपहार है। यह संसार अपूर्ण है, क्योंकि इस में प्रेम की कमी है। इस लिए संसार मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं तो अपने कल्पनाओं के संसार मैं रहना पसन्द करता हूँ।

मैं प्रेम की अग्नि में जल रहा हूँ। प्रेम मैं मग्न होने के कारण सुख –दुख के दोनों भावों को समान रूप से स्वीकार करता हूँ। संसार रूपी सागर को पार करने के लिए कर्म की नाव बनाते है। मैं प्रेम की नाव पर सवार हो कर संसार रूपी सागर की लहरों पर मस्त बहता हूँ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. आत्म कथात्मक शैली
2. खड़ी बोली
3. रूबाई छन्द
4. भव–सागर और भव–मौजों में रूपक अलंकार है
5. सुख–दुख सामासिक शब्द

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ
जो मुझको बाहर हँसा रूलाती भीतर
मैं हाय किसी की याद लिए फिरता हूँ ।
कर यत्न मिटे सब सत्य किसी ने जाना ?
नादान वहीं है हाय जहाँ पर दाना
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे ?
मैं सीख रहा हूँ सीखा ज्ञान भुलाना ।

शब्दार्थ :– यौवन = जवानी, उन्माद = मस्ती, अवसाद = दुख, यत्न = कोशिश, प्रयास, नादान = नासमझ, दाना = ज्ञानी, मूठ = मूर्ख, जग = संसार

व्याख्या :– मेरे अन्दर युवा अवस्था की मस्ती है। उस मस्ती में कहीं कुछ दुख है, क्योंकि मैं अपने प्रिय की याद अपने हृदय में लिये हूँ, अर्थात् मेरे हृदय मैं मेरे प्रिय की याद है। इसलिए संसार को दिखाने के लिए ऊपर से तो मैं हँसता हूँ, पर हृदय में रोता हूँ।

इस संसार के लोग सत्य को जानने के लिए अनेक यत्न करते हैं परन्तु सत्य को जान नहीं पाते। इस संसार में सत्य के जानने वाले ज्ञानी ही सब से बड़े नासमझ हैं। क्या संसार मूर्ख नहीं जो

सुख, सुविधाओं का सत्य जान लेता है। मैं इस ज्ञान को भुला देना चाहता हूँ और प्रेम रूपी सत्य में जीना चाहता हूँ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. आत्म कथात्मक शैली
2. खड़ी बोली
3. रूबाई छन्द
4. उन्माद में अवसाद विरोधाभास अलंकार
5. कर यत्न ..... ?
   फिर मूढ न क्या ..... ? पंक्तियों में प्रश्न अलंकार

मैं और और जग और कहाँ का नाता
मैं बना–बना कितने जग रोज मिटाता
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता ।
निज रोदन मे राग लिए फिरता हूँ
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ
हो जिस पर भूपों के प्रसाद निछावर
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ ।

शब्दार्थ :– नाता = संबंध, वैभव = सुख सुविधाएँ, रोदन = रोना, राग = प्रेम, आग = जोश, भूप = राजा, प्रासाद = महल, निछावर = कुर्बान, खंडहर = टूटा हुआ भवन, भाग = हिस्सा

व्याख्या :– मेरा तथा इस संसार का कोई संबंध नहीं है, क्योंकि हम दोनों का स्वभाव अलग–अलग है। संसार के लोग इस पृथ्वी पर सुख–सुविधाओं को इकट्टा करते हैं। मैं अपने पैरों की ठोकर से उन सुविधाओं को ठुकराता हूँ।

मेरे रोनें मे भी प्रेम छिपा है तथा मेरी शीतल वाणी में परिवर्तन की आग छिपी है। संसार में राजा जिस प्रेम पर बड़े–बड़े महल न्यौछावर करते हैं, मैं उसी प्रेम का टूटा हुआ भवन हूँ। अर्थात् प्रेम में मेरा हृदय टूटा हुआ है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. आत्म कथात्मक शैली
2. खड़ी बोली
3. रूबाई छन्द
4. रोदन में राग, शीतल वाणी में आग, विरोधाभास अलंकार
5. और शब्द की आवृति के कारण यमक अलंकार
6. कहाँ का नाता प्रश्न अलंकार
7. बना–बना पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
8. कहाँ का, जग जिस अनुप्रास अलंकार

मैं रोया इसको तुम कहते हो गाना
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए
मैं दुनिया का हूँ एक नया दिवाना

मैं दिवानों का वेश लिए फिरता हूँ
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ ।

शब्दार्थ :– फूट पड़ा = भाव अभिव्यक्त करना, दीवाना = पागल, मादकता = मस्ती, निःशेष = संपूर्ण

व्याख्या :– प्रेम की पीड़ा के कारण जब मैं रोता हूँ और हृदय की व्यथा शब्द रूप में व्यक्त होती है, तो तुम उसे गाना कहते हो। जब वेदना अधिक हो जाती है और शब्द रूप में व्यक्त होती है, तो तुम कहते हो–मैंने छंद बनाया। इसी लिए संसार के लोग मुझे कवि के रूप में अपनाते हैं, जबकि वास्तविकता यह है। कि मैं तो एक प्रेम दीवाना हूँ।

मेरी वेश भूषा दीवानों जैसी है मैं पूर्ण रूप से प्रेम की मस्ती मे मस्त हूँ। मेरे प्रेम से पूर्ण भावों को सुनकर लोग झूम उठते हैं, आनन्द में ढूब जाते हैं, इसी लिए मैं कहता हूँ कि मैं संसार के लिए मस्ती का सन्देश लेकर आया हूँ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. आत्म कथात्मक शैली
2. खड़ी बोली
3. रूबाई छन्द
4. क्यों कवि कहकर ..... पंक्ति में प्रश्न अलंकार
5. झूम झुके में अनुप्रास अलंकार

दिन जल्दी–जल्दी ढलता है

हो जाए न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो दूर नहीं
यह सोच थका दिनका पंथी भी जल्दी–जल्दी चलता है
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है

शब्दार्थ :– पथ = रास्ते में, मंजिल = लक्ष्य, पंथी = यात्री, ढलता = दिन ढलता (शाम होना)

व्याख्या :– शाम होती देख कर यात्री सारा दिन का थका होने के बाद भी जल्दी जल्दी चल रहा है, ये सोच कर कि कहीं रात ना हो जाये, क्योंकि उस का लक्ष्य दूर नहीं है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल खड़ी बोली
2. गीत विधा है
3. जीवन की क्षण भंगुरता को व्यक्त किया गया है, क्योंकि जो अब है वह कल नहीं होगा ।
4. जल्दी जल्दी पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

बच्चे प्रत्याशा में होंगे
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता के कितनी चंचलता है
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है ।

शब्दार्थ :– प्रत्याशा = आशा, नीड़ों = घोसलों, चंचलता = व्याकुलता

व्याख्या :– दिन ढलता देख चिडिया सोचती है कि बच्चे इस आशा में घोसलों से झाँक रहे होगें कि उसके माता पिता आयेंगे, उन्हें भोजन मिलेगा, उन का वात्सल्य मिलेगा। ये सब सोच कर चिडियाँ शीघ्रता से व्याकुलता से उड़ने लगती हैं।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल सहज खड़ी बोली
2. गीत विधा
3. संस्कृत के शब्द प्रत्याशा नीड़ आदि
4. दृश्य बिंब
5. जल्दी–जल्दी पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर मे विह्वलता है
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है ।

शब्दार्थ :– विकल = व्याकुल, हित = लिए, चंचल = गतिशील, शिथिल = धीमा, विह्वलता = व्याकुलता

व्याख्या :– कवि सोचता है इस संसार में वह अकेला है। उस से मिलने के लिए कोई व्याकुल नहीं है। इस लिए मैं क्यों गतिशील होऊँ, अर्थात् शीघ्रता करूँ। ऐसा सोचते ही कवि के कदम शिथिल हो जाते हैं।

कवि ये भी कहना चाहते हैं जिस व्यक्ति के सामने लक्ष्य होता है वह शीघ्रता से अपने लक्ष्य को पाना चाहता है। लक्ष्य विहीन व्यक्ति को कोई जल्दी नहीं होती।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल, सहज, खड़ी बोली
2. गीत विधा
3. संस्कृत के शब्दों का सुन्दर प्रयोग–विकल, शिथिल, विह्वलता आदि
4. जल्दी–जल्दी पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
5. मुझसे मिलने को ..... ? मैं होऊ किसके ..... ?
   प्रश्न अलंकार

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कविता एक ओर जग–जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ' विपरीत से लगने वाले इन कथनों का क्या आशय है ?
उत्तर :– जग जीवन का भार लिए घूमने का आशय है कि संसार में रहते हुए कवि अपनी जिम्मेदारियों को समझता है और उन्हें बाखूबी पूरा भी करता है।

मै कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ–इसका आशय है संसार के लोगों की प्रवृति अलग है। ये केवल उन्हीं का गुण गान करते हैं, जो उनका गुण गान करते हैं। ये प्रवृति कवि को अच्छी नहीं लगती। इसी लिए कवि ने उपरोक्त पंक्ति कही।

प्रश्न 2. जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं–कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
उत्तर :– सत्य को जानने के लिए अनेक यत्न किये जाते हैं, परन्तु वास्तव में यह कोई नहीं जानता कि जीवन में प्रेम ही वास्तविक सत्य है। इस संसार में ज्ञानी हैं तो अज्ञानी भी हैं।

प्रश्न 3. मैं और, और जग और कहाँ का नाता–पंक्ति में और शब्द की विशेषता बताइए ?
उत्तर :– और शब्द की आवृति के कारण यमक अलंकार का सौन्दर्य उत्पन्न हुआ है।

इन पंक्तियों के द्वारा कवि व्यक्त करना चाहते हैं मेरा तथा इस संसार के लोगों का स्वभाव अलग है। इस संसार के लोग सुख–सुविधाओं के पीछे भागते हैं, जब कि मै प्रेम दीवाना हूँ, इस लिए सुख–सुविधाओं को ठुकराता हूँ।

प्रश्न 4. शीतल वाणी में आग– के होने को क्या अभिप्राय है ?

या

'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर :– 'शीतल वाणी में आग'में विरोधाभास अलंकार उत्पन्न हुआ है। कवि का कहना है कि उसकी वाणी कोमल अवश्य है, परन्तु उस मे विद्रोह की आग छिपी है। वो ऐसे प्रेम रहित संसार को ठुकराते हैं, जो केवल सुख सुविधाओं के पीछे भागता है।

प्रश्न 5. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे ?
उत्तर :– बच्चे इस आशा में नीड़ों से झाँक रहे हैं कि शाम हो रही है, अब उनके माता पिता आयेंगे। उन्हें भोजन तो मिलेगा ही, साथ ही माता पिता का वात्सल्य भी प्राप्त होगा।

प्रश्न 6. दिन जल्दी–जल्दी ढलता है–वाक्यांश की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है ?
उत्तर :– दिन जल्दी–जल्दी ढलता है वाक्यांश की आवृति से पता चलता है कि समय गतिशील व परिवर्तनशील है ये किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। समय का उचित प्रयोग करने वाले ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

* * * * *